Class XII Session 2025-26
Subject - Hindi Core
Sample Question Paper - 6

निर्धारित समय: 3 घंटे **अधिकतम अंक: 80**

सामान्य निर्देश:

- निम्नलिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका पालन कीजिए :-
- यह प्रश्न-पत्र तीन खण्डों में विभाजित है।
- खंड - क में अपठित बोध पर आधारित प्रश्न पूछे गए हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- खंड - ख में पाठ्यपुस्तक अभिव्यक्ति और माध्यम से प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।
- खंड - ग में पाठ्यपुस्तक आरोह तथा वितान से प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।
- तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- यथासंभव तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर क्रमशः लिखिए।

खंड क (अपठित बोध)

1. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (10)** **[10]**

जब समाचार-पत्रों में सर्वसाधारण के लिए कोई सूचना प्रकाशित की जाती है, तो उसको विज्ञापन कहते हैं। यह सूचना नौकरियों से संबंधित हो सकती है, खाली मकान को किराए पर उठाने के संबंध में हो सकती है या किसी औषधि के प्रचार से संबंधित हो सकती है। कुछ लोग विज्ञापन के आलोचक हैं। वे इसे निरर्थक मानते हैं। उनका मानना है कि यदि कोई वस्तु यथार्थ रूप में अच्छी है, तो वह बिना किसी विज्ञापन के ही लोगों के बीच लोकप्रिय हो जाएगी, जबकि खराब वस्तुएँ विज्ञापन की सहायता पाकर भी भंडाफोड़ होने पर बहुत दिनों तक टिक नहीं पाएँगी, परंतु लोगों की यह सोच गलत है।

आज के युग में मानव का प्रचार-प्रसार का दायरा व्यापक हो चुका है। अतः विज्ञापनों का होना अनिवार्य हो जाता है। किसी अच्छी वस्तु की वास्तविकता से परिचय पाना आज के विशाल संसार में विज्ञापन के बिना नितांत असंभव है। विज्ञापन ही वह शक्तिशाली माध्यम है, जो हमारी जरूरत की वस्तुएँ प्रस्तुत करता है, उनकी माँग बढ़ाता है और अंततः हम उन्हें जुटाने चल पड़ते हैं। यदि कोई व्यक्ति या कंपनी किसी वस्तु का निर्माण करती है, उसे उत्पादक कहा जाता है। उन वस्तुओं और सेवाओं को खरीदने वाला उपभोक्ता कहलाता है। विज्ञापन इन दोनो को जोड़ने का कार्य करता है। वह उत्पादक को उपभोक्ता के संपर्क में लाता है तथा माँग और पूर्ति में संतुलन स्थापित करने का प्रयत्न करता है। पुराने जमाने में किसी वस्तु की अच्छाई का विज्ञापन मौखिक तरीके से होता था। काबुल का मेवा, कश्मीर की जरी का काम, दक्षिण भारत के मसाले आदि वस्तुओं की प्रसिद्धि मौखिक रूप से होती थी। उस समय आवश्यकता भी कम होती थी तथा लोग किसी वस्तु के अभाव की तीव्रता का अनुभव नहीं करते थे। आज समय तेजी का है। संचार-क्रांति ने जिंदगी को स्पीड दे दी है। मनुष्य की आवश्यकताएँ बढ़ती जा रही हैं, इसलिए विज्ञापन मानव-जीवन की अनिवार्यता बन गया है।

(i) विज्ञापन का मुख्य उद्देश्य क्या है? (1)

क) वस्तुओं का निर्माण करना

ख) वस्तुओं को खरीदना

ग) उत्पादक और उपभोक्ता को जोड़ना

घ) वस्तुओं का भंडारण करना

(ii) पुराने जमाने में वस्तुओं की अच्छाई का विज्ञापन कैसे होता था? (1)

क) समाचार-पत्रों के माध्यम से

ख) मौखिक तरीके से

ग) टेलीविजन पर

घ) रेडियो पर

(iii) निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए - (1)

कथन (I) : विज्ञापन उत्पादक और उपभोक्ता के बीच संबंध स्थापित करता है।

कथन (II) : अच्छी वस्तुओं को लोकप्रिय बनाने के लिए विज्ञापन की आवश्यकता नहीं होती।

कथन (III) : आधुनिक युग में किसी वस्तु की वास्तविकता से परिचित होने के लिए विज्ञापन आवश्यक है।

कथन (IV) : पुराने समय में वस्तुओं का विज्ञापन मौखिक रूप से होता था।

गद्यांश के अनुसार कौन-सा/से कथन सही हैं?

क) केवल कथन (I), (III) और (IV) सही हैं।

ख) केवल कथन (II), (III) और (IV) सही हैं।

ग) केवल कथन (I) और (II) सही हैं।

घ) केवल कथन (II) और (IV) सही हैं।

(iv) पुराने समय में काबुल के मेवे और कश्मीर की जरी का काम कैसे प्रसिद्ध होता था? (1)

(v) विज्ञापन क्यों अनिवार्य हो गया है? (2)

(vi) विज्ञापन किस प्रकार उत्पादक और उपभोक्ता को जोड़ने का कार्य करता है? (2)

(vii) आज के युग में विज्ञापन का क्या महत्व है? (2)

2. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (8)** **[8]**

माना आज मशीनी युग में, समय बहुत महँगा है लेकिन
तुम थोड़ा अवकाश निकाली, तुमसे दो बातें करनी हैं।
उम्र बहुत बाकी है, लेकिन, उम्र बहुत छोटी भी तो है
एक स्वप्न मोती का है तो, एक स्वप्न रोटी भी तो है
घुटनों में माथा रखने से पोखर पार नहीं होता है:
सोया है विश्वास जगा लो, हम सबको नदिया तरनी है!
तुम थोड़ा अवकाश निकाली, तुम से दो बातें करनी हैं!
मन छोटा करने से मोटा काम नहीं छोटा होता है,
नेह-कोष को खुलकर बाँटो, कभी नहीं टोटा होता है,
आँसू वाला अर्थ न समझे, तो सब ज्ञान व्यर्थ जाएँगे:
मत सच का आभास दबा लो, शाश्वत आग नहीं मरनी है!
तुम थोड़ा अवकाश निकाली, तुमसे दो बातें करनी हैं।

i. **नीचे दिए गए कथनों में से सही विकल्प का चयन कीजिए: (1)**

कथन:

I. झुकना एक स्वाभाविक क्रिया है।

II. हम कभी-कभी जानबूझकर चीजें गिरा देते हैं क्योंकि हम झुकना भूल जाते हैं।

III. लोग केवल ईश्वर के सामने झुकते हैं।

IV. कुछ लोग इतने ज्यादा झुके रहते हैं कि वे सीधे खड़े होना भूल जाते हैं।

विकल्प:

क) कथन I, II, और IV सही हैं।

ख) केवल कथन III सही है।

ग) केवल कथन I और IV सही हैं।

घ) कथन I, II, और III सही हैं।

ii. **'घुटनों में माथा रखने से पोखर पार नहीं होता है' पंक्ति से कवि का क्या अभिप्राय है? (1)**

क) ध्यान और प्रार्थना से सब कुछ संभव है

ख) केवल चिंतन और निराशा से समस्याओं का समाधान नहीं होता

ग) मेहनत से ही सफलता मिलती है

घ) किसी भी कार्य के लिए सहायता की आवश्यकता होती है

iii. **नीचे दिए गए कॉलम 1 को कॉलम 2 से सुमेलित करें और सही विकल्प का चयन करें: (1)**

कॉलम 1	**कॉलम 2**
I. किसी के सामने झुकना	1. आदत
II. कभी झुकने में नाकामी	2. अफसोस
III.जरूरत के समय झुकना	3. इरादा

क) I - (3), II - (2), III - (1)

ख) I - (1), II - (3), III - (2)

ग) I - (2), II - (1), III - (3)

घ) I - (1), II - (2), III - (3)

iv. **मशीनी युग में समय महँगा होने का क्या तात्पर्य है? (1)**

v. **'तुम थोड़ा अवकाश निकाली, तुमसे दो बातें करनी हैं' इस पंक्ति में कवि किससे और क्यों बात करना चाहते हैं? (2)**

vi. **मन और स्नेह के बारे में कवि क्या परामर्श दे रहा है और क्यों? (2)**

खंड- ख (अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक के आधार पर)

3. **दिए गए तीन विषयों में से किसी एक विषय पर आधारित लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेखन लिखिए।** **[6]**

   i. **सबका विकास, सबका विश्वास** विषय पर रचनात्मक लेख लिखिए। **[6]**

   ii. **बीती ताहि बिसारि दे** विषय पर अनुच्छेद लिखिए। **[6]**

   iii. **भारतीय संस्कृति** विषय पर अनुच्छेद लिखिए। **[6]**

4. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये: (2 X 4 = 8)** **[8]**

   i. ऑल इंडिया रेडियो (आकाशवाणी) की स्थापना कब हुई। इसकी व्यापकता बताइए। **[2]**

   ii. जन-धन योजना विषय पर एक आलेख लिखिए। **[2]**

   iii. आपकी बस्ती के निकट लगने वाले साप्ताहिक बाजार को विषय बनाकर एक फीचर तैयार कीजिए। **[2]**

   iv. प्राचीन काल में मौखिक कहानियों की लोकप्रियता के क्या कारण थे? दो कारण लिखिए। **[2]**

5. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: (4 X 2 = 8)** **[8]**

   i. विशेष लेखन में **डेस्क** की क्या भूमिका होती है? **[4]**

   ii. विचारपरक लेखन किसे कहते हैं? इसके भेदों का उल्लेख करते हुए अख़बार को होने वाले लाभ बताइए। **[4]**

   iii. समाचार-पत्रों में संपादकीय लेखन का क्या महत्त्व है? **[4]**

खंड- ग (आरोह भाग - 2 एवं वितान भाग-2 पाठ्यपुस्तकों के आधार पर)

6. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** **[5]**

हो जाए न पथ में रात कहीं,

मंजिल भी तो है दूर नहीं-

यह सोच थका दिन का पंथी भी जल्दी-जल्दी चलता है!

दिन जल्दी- जल्दी ढलता है!

   i. पंथी को कहाँ रात होने की संभावना है?

क) गली में
ख) घर में
ग) पथ में
घ) बाज़ार में

ii. क्या दूर नहीं है?

क) मंजिल
ख) विद्यालय
ग) शहर
घ) दुकान

iii. कौन जल्दी-जल्दी चलता है?

क) विद्यार्थी
ख) शिक्षक
ग) अभिभावक
घ) पंथी

iv. पंथी कैसे चलता है?

क) हँसकर
ख) धीरे-धीरे
ग) जल्दी-जल्दी
घ) दौड़कर

v. दिन कैसे ढलता है?

क) जल्दी-जल्दी
ख) आस्य से
ग) मंद गति से
घ) धीरै-धीरे

7. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[6]**

i. व्याख्या करें - **[3]**
रोपाई क्षण की,
कटाई अनंतता की
लुटते रहने से ज़रा भी नहीं कम होती।

ii. तुलसी के संकलित कवित्तों में चित्रित तत्कालीन आर्थिक विषमताओं पर टिप्पणी कीजिए। **[3]**

iii. **कविता के बहाने सब घर एक कर देने के माने क्या होते हैं?** स्पष्ट कीजिए। **[3]**

8. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[4]**

i. बिंब कितने प्रकार के होते हैं? **पतंग** कविता से श्रव्य बिंब छाँटिए। **[2]**

ii. दूरदर्शन के स्टूडियो में अपाहिज से क्या प्रश्न पूछे गए और क्यों? **[2]**

iii. **बादल राग** पूरी कविता में प्रकृति का मानवीकरण किया गया है। आपको प्रकृति का कौन-सा मानवीय रूप पसंद आया और क्यों? **[2]**

9. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** **[5]**

इसी प्रकार स्वतंत्रता पर भी क्या कोई आपत्ति हो सकती है? गमनागमन की स्वाधीनता, जीवन तथा शारीरिक सुरक्षा की स्वाधीनता के अर्थों में शायद ही कोई 'स्वतंत्रता' का विरोध करे। इसी प्रकार संपत्ति के अधिकार, जीविकोपार्जन के लिए आवश्यक औज़ार व सामग्री रखने के अधिकार, जिससे शरीर को स्वस्थ रखा जा सके, के अर्थ में भी 'स्वतंत्रता' पर कोई आपत्ति नहीं हो सकती। तो फिर मनुष्य की शक्ति के सक्षम एवं प्रभावशाली प्रयोग की भी स्वतंत्रता क्यों नहीं प्रदान की जाए?

जाति-प्रथा के पोषक, जीवन, शारीरिक-सुरक्षा तथा संपत्ति के अधिकार की स्वतंत्रता को तो स्वीकार कर लेंगे, परंतु मनुष्य के सक्षम एवं प्रभावशाली प्रयोग की स्वतंत्रता देने के लिए जल्दी तैयार नहीं होंगे, क्योंकि इस प्रकार की स्वतंत्रता का अर्थ होगा अपना व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता किसी को नहीं है, तो उसका अर्थ उसे 'दासता' में जकड़कर रखना होगा, क्योंकि 'दासता' केवल कानून पराधीनता को ही नहीं कहा जा सकता। 'दासता' में वह स्थिति भी सम्मिलित है जिससे कुछ व्यक्तियों को दूसरे लोगों के द्वारा निर्धारित व्यवहार एवं कर्त्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़ता है। यह स्थिति कानूनी पराधीनता न होने पर भी पाई जा सकती है। उदाहरणार्थ, जाति प्रथा की तरह ऐसे वर्ग होना संभव है, जहाँ कुछ लोगों को अपनी इच्छा के विरुद्ध पेशे अपनाने पड़ते हैं।

i. दासता में कौन-सी अवधारणा सम्मिलित नहीं है?

क) कानूनी पराधीनता का होना
ख) इच्छा के विरुद्ध कार्य करना
ग) स्वाधीनता के साथ जीना
घ) दूसरों के द्वारा निश्चित कार्य करना

ii. मनुष्य के प्रभावशाली प्रयोग से लेखक का क्या तात्पर्य है?

क) उसे अपनी इच्छा से जाति के चयन का अधिकार मिले
ख) उसे अपनी इच्छा से कार्य करने की स्वतंत्रता दी जाए
ग) उसे शारीरिक-सुरक्षा तथा संपत्ति का अधिकार दिया जाए
घ) उसे शारीरिक स्वतंत्रता प्रदान की जाए

iii. जाति-प्रथा के पोषक यदि मनुष्य के लक्षण एवं प्रभावशाली प्रयोग की स्वतंत्रता दें, तब इसका क्या परिणाम होगा?

क) दासता को बढ़ावा मिलेगा
ख) स्वतंत्रता को बढ़ावा मिलेगा
ग) लोकतांत्रिक मूल्य सुदृढ़ होंगे
घ) कानूनी-पराधीनता बढ़ जाएगी

iv. **स्वतंत्रता** पर किसी को कोई आपत्ति क्यों नहीं है?

क) क्योंकि सभी को स्वतंत्र और सुरक्षित रहना प्रिय है
ख) क्योंकि स्वतंत्रता सभी को जाति विरोधी लगती है
ग) इसके साथ भी जातिवाद और शोषण की प्रक्रिया बनी रहती है
घ) इससे समाज में दासता समाप्त हो जाएगी

v. जाति-प्रथा के पोषक से लेखक का क्या तात्पर्य है?

क) जातिगत भेदभाव को प्राथमिकता देने वाले
ख) जाति के चयन को बढ़ावा देने वाले
ग) जातिगत भेदभाव के व्यवहार को समाप्ति देने वाले
घ) जाति को कानूनी मान्यता दिलाने की कोशिश करने वाले

10. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[6]**

i. गाँव वालों ने अपने राज-पहलवान की किस प्रकार सहायता की? क्या गाँव वाले अपने इस प्रयास में सफल हुए? **[3]**

ii. महादेवी वर्मा और भक्तिन के संबंधों की तीन विशिष्टताओं का उल्लेख कीजिए। **[3]**

iii. कालिदास कृत शकुंतला के सौंदर्य को महत्त्व देकर लेखक सौंदर्य को स्त्री के एक मूल्य के रूप में स्थापित करता हुआ प्रतीत होता है। क्या यह सत्य है? यदि **हाँ** तो क्या ऐसा करना उचित है? **[3]**

11. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[4]**

i. बाज़ार जाते समय आपको किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए? **बाज़ार दर्शन** पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए। **[2]**

ii. **काले मेघा पानी दे** संस्मरण के लेखक ने लोक- प्रचलित विश्वासों को अंधविश्वास कहकर उनके निराकरण पर बल दिया है।- इस कथन की विवेचना कीजिए। **[2]**

iii. **बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर** पाठ के आधार पर जाति-प्रथा के कारण काम के प्रति भारत में क्या स्थिति है? **[2]**

12. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[10]**

i. पार्टी में यशोधर बाबू का व्यवहार आपको कैसा लगा? **सिल्वर वैडिंग** कहानी के आधार पर बताइए। **[5]**

ii. **जूझ** कहानी के नायक के चरित्र की विशेषताओं पर सोदाहरण प्रकाश डालते हुए अध्ययन का महत्व्व समझाइए। **[5]**

iii. टूटे-फूटे खंडहर, सभ्यता और संस्कृति के इतिहास के साथ-साथ धड़कती ज़िंदगी के अनछुए समयों का भी दस्तावेज होते हैं। इस कथन की समीक्षा **अतीत में दबे पाँव** पाठ के आधार पर कीजिए। **[5]**

उत्तर

खंड क (अपठित बोध)

1. (i) ग) उत्पादक और उपभोक्ता को जोड़ना
   (ii) ख) मौखिक तरीके से
   (iii) क) केवल कथन (I), (III) और (IV) सही हैं।
   (iv) पुराने समय में काबुल के मेवे और कश्मीर की जरी का काम मौखिक रूप से प्रसिद्ध होता था।
   (v) आज के युग में मानव का प्रचार-प्रसार का दायरा व्यापक हो चुका है और किसी अच्छी वस्तु की वास्तविकता से परिचय पाना विशाल संसार में विज्ञापन के बिना नितांत असंभव है, इसलिए विज्ञापन अनिवार्य हो गया है।
   (vi) विज्ञापन उत्पादक को उपभोक्ता के संपर्क में लाता है तथा माँग और पूर्ति में संतुलन स्थापित करने का प्रयत्न करता है।
   (vii) आज के युग में विज्ञापन आवश्यकताओं को प्रस्तुत करता है, उनकी माँग बढ़ाता है और लोगों को उन्हें जुटाने के लिए प्रेरित करता है।
2. i. क) कथन I, II, और IV सही हैं।
   ii. ख) केवल चिंतन और निराशा से समस्याओं का समाधान नहीं होता
   iii. क) I - (3), II - (2), III - (1)
   iv. इस युग में व्यक्ति समय के साथ बँध गया है। उसे हर घंटे के हिसाब से मजदूरी मिलती है।
   v. 'तुम थोड़ा अवकाश निकाली, तुमसे दो बातें करनी हैं' में कवि अपने साथी या प्रियजन से बात करना चाहते हैं, ताकि वे जीवन की सच्चाई, संघर्षों, और समय की महत्ता के बारे में चर्चा कर सकें। कवि चाहता है कि व्यक्ति जीवन के महत्वपूर्ण मुद्दों पर ध्यान दें और उनसे निपटने के लिए समय निकालें।
   vi. मन के बारे में कवि का मानना है कि मनुष्य को हिम्मत रखनी चाहिए। हौसला खोने से बाधा खत्म नहीं होती। स्नेह भी बाँटने से कभी कम नहीं होता। कवि मनुष्य को मानवता के गुणों से युक्त होने के लिए कह रहा है।

खंड- ख (अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक के आधार पर)

3. दिए गए तीन विषयों में से किसी एक विषय पर आधारित लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेखन लिखिए।

(i) **"सबका विकास, सबका विश्वास"**

'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास' प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के द्वारा देशवासियों के साथ किया गया एक समर्पण रूपी वायदा है। मोदी सरकार ने अपनी कार्यशैली से लोगों को बता दिया कि सूझ-बूझ और गंभीरता से योजनाओं को क्रियान्वित कर देश में व्यापक बदलाव लाया जा सकता है। सरकार ने अपनी योजनाओं के केंद्र में सवा सौ करोड़ देशवासियों को रखा है। उसकी सोच दूरदर्शी रही है, जिसमें आगे की कई पीढ़ियों का ख्याल रखा गया है। गरीब, मजदूर, महिला, अल्पसंख्यक, किसान इत्यादि के लिए कई क्रांतिकारी योजनाओं पर अमल, कौशल विकास की योजनाओं के साथ युवाओं के लिए रोजगार बढ़ाने के कदमों पर भी जोर दिया गया है। डिजिटल इंडिया पर फोकस करने के साथ विकास की तमाम योजनाओं में अत्याधुनिक तकनीक के सहारे सरकार की कोशिश भारत को पूर्णत: आत्मनिर्भर बनाने की है, जो विश्वशक्ति के रूप में भारत की पहचान को स्थापित करने वाला साबित होगा और एक नए भारत का निर्माण तथा उदय होगा।

2 अक्टूबर 2014 को प्रधान मंत्री ने स्वच्छ भारत अभियान की भी शुरुआत की, जो कि आज एक राष्ट्रीय आंदोलन बन चुका है। विभिन्न क्षेत्रों के व्यक्ति एकजुट होकर इस आंदोलन में शामिल हुए और यह एक सच्चा जन आंदोलन बन गया है, जिसकी कामयाबी जनभागीदारी की वजह से संभव हुई है। निश्चित तौर पर हम कह सकते हैं कि लोगों की भागीदारी और जन शक्ति की बदौलत सरकार सही मायने में बदलाव ला सकती है, बशर्ते लोग पूरे दिल और समर्पण से परिवर्तन के लिए प्रयास करें। एक सच्चा जन सेवक वही होता है, जो प्रजा के हित में अपना तन-मन-धन सब लगा दे और प्रजा के विश्वास पर खरा उतरे।

(ii) **बीती ताहि बिसारि दे**

"बीती ताहि बिसारि दे" एक महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक कहावत है, जिसका अर्थ है कि हमें अपने अतीत को भूलकर भविष्य की ओर ध्यान देना चाहिए। यह कहावत हमें सिखाती है कि जीवन में आगे बढ़ने के लिए हमें अपने बीते हुए समय की चिंताओं और असफलताओं को पीछे छोड़ना चाहिए।

अतीत में हुई गलतियों और असफलताओं पर ध्यान केंद्रित करने से हम अपने वर्तमान और भविष्य को बेहतर बनाने के अवसरों को खो देते हैं। यह कहावत हमें प्रेरित करती है कि हम अपने अतीत से सीखें, लेकिन उसे अपने ऊपर हावी न होने दें।

जीवन में हर व्यक्ति को कठिनाइयों और चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। लेकिन जो व्यक्ति अपने अतीत की नकारात्मकताओं को भूलकर आगे बढ़ता है, वही सच्चे अर्थों में सफल होता है। यह कहावत हमें आत्मविश्वास और सकारात्मकता के साथ जीवन जीने की प्रेरणा देती है।

इस प्रकार, "बीती ताहि बिसारि दे" का पालन करके हम अपने जीवन को अधिक सार्थक और सफल बना सकते हैं। यह हमें सिखाती है कि अतीत को भूलकर, वर्तमान में जीना और भविष्य की ओर बढ़ना ही सच्ची सफलता का मार्ग है।

(iii) **भारतीय संस्कृति: एक समृद्ध धरोहर**

भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे पुरानी और विविध संस्कृतियों में से एक है। यह हजारों वर्षों की परंपराओं, धार्मिक विश्वासों, और सामाजिक मूल्यों का संगम है। भारतीय संस्कृति की विशेषता इसकी धार्मिक विविधता में निहित है| यहाँ हिन्दू, मुस्लिम, सिख, बौद्ध, और जैन धर्म प्रमुख हैं। प्रत्येक धर्म ने यहाँ अपनी-अपनी परंपराओं और त्योहारों के माध्यम से इस संस्कृति को समृद्ध किया है।

भारतीय साहित्य और कला भी इस संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। जहाँ महाभारत और रामायण जैसे महाकाव्य भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर हैं वहीं शास्त्रीय नृत्य शैलियाँ जैसे भरतनाट्यम और कथक, भारतीय सांस्कृतिक धरोहर की अमूल्य निधि को संजोयें हुए रखा हैं।

भारतीय त्योहार, जैसे दिवाली, होली, और ईद, सामाजिक और धार्मिक एकता को बढ़ावा देते हैं।

भारतीय संस्कृति का एक प्रमुख पहलू परिवार और सामाजिक संरचना है, जहाँ संयुक्त परिवार की प्रणाली और परंपरागत मूल्य महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह संस्कृति न केवल अपनी ऐतिहासिक और धार्मिक धरोहर के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि इसकी वैज्ञानिक और दार्शनिक धारणाएँ भी विश्वभर में प्रशंसा प्राप्त करती हैं।

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये: (2 X 4 = 8)

(i) ऑल इंडिया रेडियो की स्थापना सन् 1936 में हुई। इसका प्रसार 24 भाषाओं और 146 बोलियों के साथ देश की 96 प्रतिशत आबादी तक है।

(ii) **जन-धन योजना**

जन-धन योजना का आशय है कि भारत के सभी नागरिकों के पास अपना बैंक खाता हो, जो खास कर गरीबों के लिए आवश्यक है। 15 अगस्त, 2014 को प्रधानमंत्री नरेद्र मोदी ने जन-धन योजना की घोषणा की, जिसके अंतर्गत प्रत्येक परिवार को अपना एक बैंक अकाउंट बनाना होगा, जिसमें उन्हें 1 लाख रूपये की बीमा राशि एवं एक डेबिट कार्ड की सुविधा प्राप्त होगी।

प्रधानमंत्री जन-धन योजना गरीबों को ध्यान में रखकर बनाई गई है, जिससे उनमे बचत की भावना का विकास हो, साथ ही उनमें भविष्य की सुरक्षा का अहम भाव जागे। इसके अतिरिक्त इस कदम से देश का पैसा भी सुरक्षित होगा और जनहित के कार्यों को बढ़ावा भी मिलेगा। यह योजना केद्र सरकार का बड़ा और अहम फैसला है, जोकि देश की नींव को मजबूत बनाएगा।

प्रधानमंत्री जन-धन योजना का नारा है 'सबका साथ सबका विकास' अर्थात् देश के विकास में ग्रामीण लोगों का योगदान अहम है, जिसे भूला नहीं जा सकता। अब तक जितनी भी योजनाओं को सुना जाता था वह केवल शहरों तक ही सीमित होती थीं, लेकिन देश का बड़ा भाग ग्रामीण तथा किसान परिवार हैं, जिन्हें जागरूक तथा सुरक्षित करना ही इस योजना का अहम उद्देश्य है।

इस योजना के अंतर्गत कई मूलभूत सुविधाएँ भी प्रदान की गई हैं। खाता धारकों को 30,000 रूपये का बीमा कवरेज दिया जाएगा। साथ ही किसी आपत्ति की स्थिति में बीमा राशि 1 लाख रूपये तक का कवरेज दिया जाएगा।

इस योजना में शून्य स्तर पर भी खाते खोले जा रहे हैं, जिन्हें जीरो बैलेंस की सुविधा कहा जाता है। जन-धन योजना वर्तमान सरकार द्वारा लिया गया अहम निर्णय है, जिसके तहत गरीबों को आर्थिक रूप से थोड़ा सशक्त बनाने की कोशिश की गई है, साथ ही बैंकिंग सिस्टम को देश के हर व्यक्ति तक पहुँचाने की कोशिश की गई है। इस योजना से गरीबों और मजदूरों को लाभ मिल रहा है।

(iii) **'साप्ताहिक बाज़ार'**

प्रत्येक रविवार को लगने वाले साप्ताहिक बाज़ार के आकर्षण का जादू भी ख़ूब सिर चढ़कर बोलता है। जी हाँ, मेरे घर से महज़ दो सौ मीटर की दूरी पर ही बाज़ार लगता है। जहाँ हर प्रकार की हरी सब्जियाँ, मिठाइयाँ, फल, बच्चों के खिलौने, श्रृंगारिक वस्तु, कपड़े, रोजमर्रा की अन्य उपयोगी वस्तुएँ इत्यादि ख़रीदी-बेची जाती हैं। सच्चे अर्थों में देखा जाए तो बाज़ार सादगी में नहीं, बल्कि शोरगुल वातावरण में सजता-संवरता है। यही उसकी सार्थकता भी है। सारे दुकानदारों के बेचने का अपना अलग ही तरीका होता है। कोई भोंपू बजाकर भीड़ को अपनी ओर आकर्षित करता है, तो कोई ऊँची आवाज़ का सहारा लेकर कह रहा होता है कि - 'आइए-आइए अच्छे, सस्ते और टिकाऊ माल लेकर जाइए'। यहाँ तक कि कोई अपनी वस्तु में कुछ पैसे की छूट देकर लोगों को खींचने की कोशिश करता है। इस तरह बाज़ार धीरे-धीरे अपने रंग में ढलता चला जाता है। इस साप्ताहिक बाज़ार का इंतज़ार हर वर्ग के लोगों को होता है। कोई बाज़ार के जादू को महज़ देखने और जीने की चाह लिए इंतज़ार करता है, कोई अपने व्यवसाय से आय करने के लिए, कोई अपनी ज़रूरत का सामान खरीदने के लिए इत्यादि।

एकदिन विमला मौसी अपने पंद्रह वर्षीय पोते को सौ रूपए का नोट देते हुए कहा कि - 'देख बेटा, तुमको जो सामान बोली हूँ, सिर्फ़ उसी को खरीदना, बाकी के पैसे वापस ले आना'। उसके पोते ने भी वैसा ही किया। विमला मौसी के व्यवहार से एक बात तो समझ में आ गई कि अगर हम बाज़ार जाकर मात्र ज़रूरत के सामान ही खरीदेंगे तो इसमें बाज़ार की भी सार्थकता है और हम फिजूलखर्ची से भी बचे रहेंगे, वरना बाज़ार के माया जाल में जो भी फंसा है, वह बर्बाद ही हुआ है।

(iv) प्राचीन काल में मनोरंजन का कोई साधन नहीं था इसलिए मौखिक कहानियाँ अधिक लोकप्रिय थीं। इसके अतिरिक्त इनकी लोकप्रियता का प्रमुख कारण यह भी था कि उस समय इससे बड़ा कोई संचार माध्यम भी नहीं था। धर्म प्रचारकों ने अपने विचार, आदर्श और मूल्य लोगों तक पहुँचाने के लिए इसी का सहारा लिया।

5. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: (4 X 2 = 8)

(i) विशेष लेखन में "डेस्क" का खास महत्त्व होता है। समाचार पत्र-पत्रिकाओं ,रेडियो ,टीवी आदि में विशेष लेखन के लिए अलग "डेस्क" होता है और उस पर काम करने वाले पत्रकारों का समूह भी अलग होता है जैसे समाचारपत्र में बिजनेस कारोबार का अलग डेस्क होता है तो खेल का अलग। इन डेस्कों पर कार्य करने वाले उपसंपादकों और संवाददाताओं से अपेक्षा की जाती है कि वे अपने -अपने क्षेत्र में विशेषज्ञ हों।

(ii) समाचार पत्रों मे समाचारों के अतिरिक्त संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होने वाले संपादकीय, टिप्पणियाँ, लेख आदि विचारपरक लेख कहलाते है। विभिन्न विषय के विशेषज्ञों/वरिष्ठ पत्रकारों के स्तंभ (कॉलम) आलेख, फीचर आदि इनके भेद हैं। इनका प्रमुख लाभ यह है कि ये अखबारों की छवि का निर्माण करते हैं एवं जनमत को प्रतिबिंबित करते हैं।

(iii) संपादकीय लेखन के कुछ मुख्य लाभ निम्नलिखित हैं -

- **जनमत का निर्माण:** संपादकीय लेख महत्वपूर्ण मुद्दों पर जनमत का निर्माण करते हैं और लोगों को सोचने पर मजबूर करते हैं।
- **सरकार और नीति निर्माताओं पर दबाव:** ये लेख सरकार और नीति निर्माताओं पर दबाव डालते हैं ताकि वे महत्वपूर्ण मुद्दों पर ध्यान दें और आवश्यक बदलाव करें।
- **जागरूकता फैलाना:** ऐसे लेख सामाजिक मुद्दों पर जागरूकता फैलाते हैं और लोगों को उनके अधिकारों और जिम्मेदारियों के बारे में शिक्षित करते हैं।
- **विभिन्न दृष्टिकोणों को प्रस्तुत करना:** ये लेख विभिन्न दृष्टिकोणों को प्रस्तुत करते हैं और लोगों को विभिन्न विचारों के बारे में जानने का अवसर प्रदान करते हैं।
- **मनोरंजन:** संपादकीय लेख मनोरंजक और जानकारीपूर्ण हो सकते हैं।

खंड- ग (आरोह भाग - 2 एवं वितान भाग-2 पाठ्यपुस्तकों के आधार पर)

6. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

हो जाए न पथ में रात कहीं,
मंजिल भी तो है दूर नहीं-
यह सोच थका दिन का पंथी भी जल्दी-जल्दी चलता है!
दिन जल्दी- जल्दी ढलता है!

(i) **(ग)** पथ में
व्याख्या:
पथ में

(ii) **(क)** मंजिल
व्याख्या:
मंजिल

(iii) **(घ)** पंथी
व्याख्या:
पंथी

(iv) **(ग)** जल्दी-जल्दी
व्याख्या:
जल्दी-जल्दी

(v) **(क)** जल्दी-जल्दी
व्याख्या:
जल्दी-जल्दी

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) साहित्यिक कृति से जो अलौकिक रस-धारा फूटती है, उसमें निहित सौंदर्य, रस और भाव न तो कम होता है, न नष्ट होता है। उसका बीज तो क्षणभर में बोया जाता है किन्तु उस रोपाई परिणाम यह होता है कि यह रस-धारा अनंत काल तक चलने वाली कटाई के रूप में आनंद देता रहता है, जितना लोग उसका सुख उठाते है उतना ही यह बढ़ता है।

(ii) गोस्वामी तुलसीदास भक्त कवि थे। उन्होंने अपने युग की आर्थिक विषमता को बहुत ही करीब से केवल देखा ही नहीं, बल्कि उसका अनुभव भी किया है। उस समय अकाल के कारण चारों ओर बेरोज़गारी और भुखमरी फैली थी। लोगों के पास काम नहीं था। वे अपनी संतान तक को बेचने के लिए विवश थे। चारों ओर लाचारी और विवशता ही दिखाई पड़ती थी। पेट की आग समुद्र की आग से भी अधिक भयंकर थी, जिसके लिए लोग ऊँचे-नीचे कर्म कर रहे थे और धंधे में भी धर्म-अधर्म का ख्याल नहीं रख रहे थे।

(iii) सब घर एक कर देने का अर्थ है-आपसी भेद, अंतर एवं अलगाव बोध को समाप्त करके सब में एक जैसे अपनत्व की भावना का प्रसार करना। बच्चे संभी घरों को अपने घर जैसा ही मानते हुए सब पर समान अधिकार जताते हैं। एक बच्चे की तरह कविता भी आपसी भेदभाव भूलकर सबके बीच समानता की भावना को प्रचारित करती है।

8. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) बिंब का अर्थ 'चित्र' है। शब्दों के द्वारा कवि जो चित्र बनाते हैं, वही 'बिंब' कहलाते हैं। इन शब्द-चित्रों का संबंध हमारी इंद्रियों से होता है I इनके प्रकार निम्नलिखित हैं -

i. **दृश्य बिंब** - आँखों से दिखने वाले
ii. **श्रव्य बिंब** - कानों से सुनाई देने वाले
iii. **घ्रातव्य बिंब** - नाक से गंध लेने वाले
iv. **आस्वाद्य बिंब** - जीभ से स्वाद देने वाले
v. **स्पर्श्य बिंब** - त्वचा से स्पर्श कराने वाले

'पतंग' कविता में निम्नलिखित श्रव्य बिंब प्रयुक्त हुए हैं घंटी बजाते हुए जोर-जोर से शुरू हो सके सीटियों, किलकारियों दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए आदि।

(ii) दूरदर्शन के स्टूडियो में अपाहिज से इस प्रकार के प्रश्न पूछे गए जिनसे साक्षात्कारकर्ता की संवेदनहीनता के ही दर्शन होते हैं, उससे पूछा गया कि क्या आप अपाहिज हैं? तो आप अपाहिज क्यों हैं? आपका अपाहिजपन तो दुःख देता होगा? ऐसे कई निरर्थक प्रश्नों के पूछे जाने के पीछे एकमात्र उद्देश्य है अपाहिज की मज़बूरी का लाभ उठाकर चैनल द्वारा अपना कार्यक्रम सफल बनाना। इस उदाहरण के माध्यम से कवि पाठक का परिचय एक छिछली और ओछी व्यावसायिक मानसिकता वाले मीडिया से करवाना चाहता है।

(iii) पूरी कविता में प्रकृति का सुंदर मानवीकरण किया गया है। हमें इसमें निम्नलिखित पंक्तियों का मानवीय करण रूप पसंद है-
हँसते हैं छोटे पौधे लघु भार-
शस्य अपार,
हिल-हिल
खिल-खिल
हाथ हिलाते,

तुझे बुलाते,
तुझे बुलाते,
विप्लव-रव से छोटे ही हैं शोभा पाते।

इस पंक्ति में छोटे पौधों को बच्चों के समान दिखाया गया है। जिस प्रकार बच्चे बात करते हुए हिलते हैं, हँसते हैं, खिलखिलाते हैं, हाथ हिलाते हैं और अपने माता-पिता को बुलाते हैं। उसे कवि ने बड़े सुंदर रूप से पौधे में दर्शाया है। पौधों का यह मानवीकरण दिल को छू जाता है। इसके साथ ही यह मानवीकरण बड़े सरल शब्दों में किया गया है। शोषक वर्ग के खिलाफ क्रांति का समर्थन करते ये पौधे मानो अपनी प्रसन्नता व्यक्त कर रहे हों।

9. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

इसी प्रकार स्वतंत्रता पर भी क्या कोई आपत्ति हो सकती है? गमनागमन की स्वाधीनता, जीवन तथा शारीरिक सुरक्षा की स्वाधीनता के अर्थों में शायद ही कोई 'स्वतंत्रता' का विरोध करे। इसी प्रकार संपत्ति के अधिकार, जीविकोपार्जन के लिए आवश्यक औज़ार व सामग्री रखने के अधिकार, जिससे शरीर को स्वस्थ रखा जा सके, के अर्थ में भी 'स्वतंत्रता' पर कोई आपत्ति नहीं हो सकती। तो फिर मनुष्य की शक्ति के सक्षम एवं प्रभावशाली प्रयोग की भी स्वतंत्रता क्यों नहीं प्रदान की जाए?

जाति-प्रथा के पोषक, जीवन, शारीरिक-सुरक्षा तथा संपत्ति के अधिकार की स्वतंत्रता को तो स्वीकार कर लेंगे, परंतु मनुष्य के सक्षम एवं प्रभावशाली प्रयोग की स्वतंत्रता देने के लिए जल्दी तैयार नहीं होंगे, क्योंकि इस प्रकार की स्वतंत्रता का अर्थ होगा अपना व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता किसी को नहीं है, तो उसका अर्थ उसे 'दासता' में जकड़कर रखना होगा, क्योंकि 'दासता' केवल कानून पराधीनता को ही नहीं कहा जा सकता। 'दासता' में वह स्थिति भी सम्मिलित है जिससे कुछ व्यक्तियों को दूसरे लोगों के द्वारा निर्धारित व्यवहार एवं कर्त्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़ता है। यह स्थिति कानूनी पराधीनता न होने पर भी पाई जा सकती है। उदाहरणार्थ, जाति प्रथा की तरह ऐसे वर्ग होना संभव है, जहाँ कुछ लोगों को अपनी इच्छा के विरुद्ध पेशे अपनाने पड़ते हैं।

(i) **(ग)** स्वाधीनता के साथ जीना
व्याख्या:
स्वाधीनता के साथ जीना

(ii) **(ख)** उसे अपनी इच्छा से कार्य करने की स्वतंत्रता दी जाए
व्याख्या:
उसे अपनी इच्छा से कार्य करने की स्वतंत्रता दी जाए

(iii) **(ग)** लोकतांत्रिक मूल्य सुदृढ़ होंगे
व्याख्या:
लोकतांत्रिक मूल्य सुदृढ़ होंगे

(iv) **(ग)** इसके साथ भी जातिवाद और शोषण की प्रक्रिया बनी रहती है
व्याख्या:
इसके साथ भी जातिवाद और शोषण की प्रक्रिया बनी रहती है

(v) **(क)** जातिगत भेदभाव को प्राथमिकता देने वाले
व्याख्या:
जातिगत भेदभाव को प्राथमिकता देने वाले

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) जब गाँव वालों को पता चला कि लुट्टन सिंह को राज-पहलवान की पदवी से हटा दिया गया है तो उन्होंने उन तीनों के लिए एक झोंपड़ी बना दी। उनके खाने-पीने का प्रबंध गाँव वालों ने उठा लिया। पहलवान भी गाँव के नौजवान बच्चों को अपने पुत्रों के साथ कुश्ती के दाँव पेंच सिखाने लगा, परंतु बेचारे गरीब किसान क्या खाकर कुश्ती सीखते। धीरे-धीरे उसका स्कूल खाली हो गया। अब केवल उसके दोनों पुत्र ही स्कूल में बच गए। वे दिनभर की मजूरी से जो भी कमाकर लाते, उससे ही तीनों मिलकर अपना गुज़ारा करते। इस प्रकार गाँव वाले इस प्रयास में सफल नहीं हुए।

(ii) **महादेवी वर्मा और भक्तिन के संबंधों की तीन विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-**

i. **परिश्रमी-** परिश्रमी भक्तिन कर्मठ महिला है। ससुराल में वह बहुत मेहनत करती है। वह घर, खेत, पशुओं अदि का सारा कार्य अकेले करती है। लेखिका के घर में भी वह उसके सारे कामकाज को पूरी कर्मठता से करती है। वह लेखिका के हर कार्य में सहायता करती है।

ii. **स्वाभिमानिनी-** भक्तिन बेहद स्वाभिमानी थी। पिता की मृत्यु पर विमाता के कठोर व्यवहार से उसने मायके जाना छोड़ दिया। पति की मृत्यु के बाद उसने किसी का पल्ला नहीं थामा तथा स्वयं मेहनत करके घर चलाया। जमींदार द्वार अपमानित करने पर वह गाँव छोड़कर शहर आ गई।

iii. **महान सेविका-** भक्तिन में सच्चे सेवक के सभी गुण थे। लेखिकाने उसे हनुमान जी से स्पर्द्धा करने वाली बताया है। वह छाया की तरह लेखिका के साथ रहती है तथा उसका गुणगान करती है। वह उसके साथ जेल जाने के लिए भी तैयार है। वह युद्ध, यात्रा आदि में हर समय उसके साथ रहना चाहती है।

(iii) कालिदास की दृष्टि में शकुंतला अद्वितीय सुंदरी है क्योंकि उसके पास आंतरिक सौंदर्य है। कालिदास मानते हैं कि शारीरिक सौंदर्य का महत्त्व तभी है, जब अमुक व्यक्ति का मन भी सुंदर हो अर्थात् मन की सुंदरता शरीर की सुंदरता से अधिक महत्त्वपूर्ण है, जो शकुंतला के पास है। आचार्य द्विवेदी भी इस बात से सहमत हैं कि सौंदर्य नारी का मूल्यवान गहना है।

11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) बाज़ार जाते समय हमें तार्किक एवं बौद्धिक दृष्टिकोण रखना चाहिए, अन्यथा अनावश्यक वस्तुओं की खरीदारी की आशंका रहती है। इसके लिए हमें निम्न बिंदुओं पर ध्यान देना चाहिए

i. बाज़ार जाते समय पर्चेज़िंग पावर के प्रति सतर्क रहना चाहिए। प्रायः पैसे की गर्मी के कारण हम अनावश्यक वस्तुओं की खरीदारी कर लेते हैं ।

ii. कई बार बाज़ार का आकर्षक रूप भी हमें अनावश्यक वस्तुओं की खरीदारी के लिए उत्तेजित करता है। अतः हमें सतर्क रहना चाहिए।

iii. बाज़ार जाते समय कभी भी मन को खाली नहीं रखना चाहिए।

(ii) लेखक ने इस संस्मरण में लोक प्रचलित विश्वासों को अंधविश्वास कहा है। पाठ में इंदर सेना के कार्य को वे पाखंड मानते हैं। आम व्यक्ति इंदर सेना के कार्य को अपने-अपने तर्कों से सही मानता है, पंरतु लेखक इन्हें गलतबताता है।गरमी के मौसम में पानी की भारी कमी होती है। तब पानी को बिना मतलब फेंकना भयंकर क्षति है ऐसे ही अंधविश्वासों के कारण देश का बौद्धिक विकास नहीं हो पाता और उसकी प्रगति में अवरोध होता है।

(iii) जाति-प्रथा के कारण भारत में काम के प्रति अरुचि की स्थिति उत्पन्न हो गई है। इसके कारण न तो व्यक्ति विपरीत दशाओं में अपना व्यवसाय बदल सकता और न ही वह अपने व्यवसाय के प्रति ईमानदार रह पाता। कभी-कभी वह इस प्रथा के कारण भूख से मरने की स्थिति में भी पहुँच जाता है।

12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) इस पार्टी में यशोधर बाबू का व्यवहार बड़ा अजीब लगा। उन्हें पार्टी इंप्रापर लगी क्योंकि उनके अनुसार ये सब अंग्रेजों के चोचले थे। अपनी पत्नी और पुत्री की ड्रेस इंप्रापर लगी, विहस्की इंप्रापर लगी, केक भी नहीं खाया क्योंकि उसमें अंडा होता है। लड्डू भी नहीं खाया क्योंकि शाम की पूजा नहीं की थी। पूजा में जाकर बैठ गए ताकि मेहमान चले जाएँ। उनका ऐसा व्यवहार वास्तव में उनकी स्मृति में बसा हुआ उनका अतीत एवं किशनदा की प्रेरणा के कारण था। यदि वे इस स्थिति से थोड़ा सामंजस्य बिठा पाते तो इतनी समस्या नहीं होती। निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि एक पिता एवं यशोधर जैसे अतीत वाले व्यक्ति की दृष्टिकोण से उनका व्यवहार अनुचित नहीं था लेकिन आधुनिकता के साथ सामंजस्य न कर पाना यशोधर के व्यक्तित्व की कमी थी।

(ii) 'जूझ' कहानी के नायक आनंदा के चरित्र की कुछ विशेषताएं इस प्रकार हैं:

- आनंदा को पढ़ाई करने की बहुत चाह थी, लेकिन उसके पिता उसका समर्थन नहीं करते थे. पिता का मानना था कि किसान को खेती के कामों से ही रोज़ी-रोटी मिलती है।
- आनंदा ने पिता की अनिच्छा के बावजूद अपनी पढ़ाई जारी रखी. वह कठोर परिश्रमी था और पिता की शर्तों के मुताबिक स्कूल जाने से पहले और लौटने के बाद खेतों में काम करता था।
- आनंदा ने अपनी जुझारू प्रवृत्ति से पिता को पढ़ाई के लिए मना लियाI
- पाठशाला में उसे आवारा और घुमक्कड़ बच्चों के साथ बिठाया गया था, लेकिन उसने अपने जुझारू पन से अपनी विपरीत परिस्थितियों पर काबू पा लिया।
- गणित के सवाल वह सबसे पहले हल कर लेता था।
- उसे अपने मराठी के अध्यापक से कविता लिखने की प्रेरणा मिली।

'जूझ' कहानी में जूझ का मतलब है उस समय और परिस्थितियों से लड़ाई करना. इस कहानी का संदेश है कि मनुष्य को अपनी समस्याओं का समाधान करने के लिए हमेशा संघर्ष करना चाहिए।

(iii) टूटे-फूटे खंडहर, सभ्यता और संस्कृति के इतिहास के साथ-साथ धड़कती ज़िंदगी के अनछुए समयों का भी दस्तावेज होते हैं। यह कथन पूर्णत: सत्य है क्योंकि किसी भी खंडहर और अन्य अवशेषों से उस युग के लोगों के आचार-व्यवहार, उनका रहन-सहन और खान-पान का पता चलता है।